भक्ति और भक्तिकाल

- डॉ. नवीन नन्दवाना

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

(राजस्थान) 313001

fppt.com

भक्ति का अर्थ

- ‘भक्ति‘ शब्द की व्युत्पत्ति ‘भज्‘ धातु से मानी जाती है जिसका अर्थ होता है- भजना।
- डॉ. धीरेन्द्र वर्मा भक्ति के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि- “‘नारद के अनुसार वह ‘परमप्रेमरूपा‘ और ‘अमृत स्वरूपा‘ है, जिसे प्राप्त कर मनुष्य सिद्ध, अमर और तृप्त हो जाता है।”

fppt.com

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार

“श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम ही भक्ति है। जब पूज्य भाव की वृद्धि के साथ श्रद्धा भाजन के सामीप्य लाभ की प्रवृत्ति हो, उसकी सत्ता के कई रूपों के साक्षात्कार की वासना हो, तब हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव समझना चाहिए।”

- ‘श्रद्धा-भक्ति’ निबंध (रामचन्द्र शुक्ल)

fppt.com

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी-

“भक्ति-काव्य हिन्दी समाज की उदारतम चेतना का दस्तावेज है। कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा इस युग के श्रेष्ठ कवि हैं, यह मान्यता सर्वस्वीकृत है। इसका निहितार्थ है कि यहाँ हिन्दू-मुसलमान, ब्राह्मण-दलित, पुरुष-स्त्री, समाज के सभी वर्गों का एक साझा रचना कर्म है, भले वे वर्ग सामान्य तौर पर समाज में अपना अलगाव बनाए रखते हों। ...भक्ति काव्य वस्तुतः हिन्दी समाज की अनेक रूढ़ियों के बावजूद उसकी प्रबल जीवनी शक्ति का गतिशील और उज्ज्वल साक्ष्य है।”

fppt.com

नवधा भक्ति

श्रवण	कीर्तन	स्मरण
सेवा	अर्चन	वन्दन
दास्य	सख्य	आत्मनिवेदन

fppt.com

भक्तिकाल

- हमारे मध्यकालीन संतों व भक्तों ने इन्हीं माध्यमों को आधार बनाते हुए अपनी वंदना के पुष्प अर्पित किए।
- हिन्दी साहित्य का पूर्व मध्यकाल जिसे भक्तिकाल (1318-1643 ई.) के नाम से जाना जाता है, वह अपनी साहित्यिक श्रेष्ठता के कारण स्वर्ण युग की संज्ञा से जाना जाता है।

fppt.com

भक्तिकाल

निर्गुण भक्ति

- संत काव्य
- प्रेम काव्य

सगुण भक्ति

- राम काव्य
- कृष्ण काव्य

fppt.com

प्रतिनिधि कवि

संत काव्य - कबीर

प्रेम काव्य - जायसी

राम काव्य - तुलसी

कृष्ण काव्य - सूरदास

fppt.com

प्रमुख संत कवि

fppt.com

प्रमुख प्रेम (सूफी) कवि

fppt.com

रामभक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवि

fppt.com

कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवि

fppt.com

इस काल में कबीर, नानक, दादू और रैदास आदि संतों ने अपनी वाणियों के माध्यम से भक्ति के साथ-साथ समाज सुधार की चेतना फैलायी। वहीं दूसरी ओर सूफी कवियों ने प्रेम तत्व के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति का मार्ग दिखाया।

fppt.com

राम भक्ति धारा के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास ने समन्वय एवं लोकमंगल का संदेश दिया तो सूरदास की अनन्य कृष्ण भक्ति भी लोक प्रसिद्ध है।

इस प्रकार इस कालखंड में विविध माध्यमों द्वारा भक्ति की प्रतिष्ठा के व्यापक प्रयास किए गए।

fppt.com

धन्यवाद !

fppt.com